पहरा इमानपर

बाबा बैद्यनाथ

पहरा इमानपर

(मैथिली गजल-संग्रह)

बाबा बैद्यनाथ

गौरी प्रकाशन
कचहरी बलुआ (पूर्णियाँ)

प्रकाशक आ पोथी भेटबाक पता :

उदय नाथ झा, गौरी प्रकाशन

कचहरी बलुआ, भाया—बनैली

जिला—पूर्णियाँ

पहिल संस्करण : एक हजार प्रति

विद्यापति-पर्व : (नवम्बर, १९८६ ई०)

दाम : चारि टाका मात्र

PAHRA IMAN PAR

(A collection of Maithili Gazals)

मुद्रक : श्रीजानकी प्रिंटिंग प्रेस,
भिखनापहाड़ी, पटना—४

दृष्टिकोण

बाबा बैद्यनाथ सुकवि छथि। हिन्दी, मैथिली दूनू भाषामे काव्य-रचना करै छथि। मुदा, गजल-विधामे हिनक ख्याति विशेष रूपें उजागर भेल छनि। पाठ करबाक शैलियो हिनक ततबे मधुर छनि, जतेक गजलक भाषा आ छन्द। हम आशान्वित छी जे हिनक ई गजल-संग्रह जन-मानसकें रसाप्लावित करबामे सफलता प्राप्त करत।

—आरसी प्रसाद सिंह

बाबा बैद्यनाथक 'पहरा इमान पर' (मैथिली गजल-संग्रह) रचनाकारक विलक्षण-प्रतिभाक दस्तावेज थिक, जाहिमे अनुभूति एवं अभिव्यक्तिक संग इमानदारी कएल गेल अछि, जेना—"ककरो रोटीपर आफत छै, कतहु सड़ैए दूध-मलाइ" आ "जे अपनहि स्वार्थमे डूबल छै, ओ नीतिक गप्प कोना सुनतै" इत्यादि। कविक आत्मनिष्ट दृष्टिकोण, एक गजलमे एकहि अनुभव-खंडक मार्मिक अभिव्यंजन, कला-विधानक दृष्टिसँ एहि कृतिकें भव्यता प्रदान करैत अछि। आशा अछि, मैथिली जगतमे एकर स्वागत होएत।

—गोपालजी झा 'गोपेश'

बइमान, बेवकूफ आर व्यर्थ—तीन भागमे बँटल आजुक समाजमे ने मजहब खतरामे अछि, आ' ने कोनो द्युत-क्षेत्र; सरिपहुं खतरामे पड़ि गेल अछि समग्र इमान। एहनामे मैथिलीक आधुनिक गजलकेर क्षितिजपर "पहरा इमानपर" ल' क' उपस्थित भेलाह अछि—बाबा बैद्यनाथ। गजल कहबाक हिनक अंदाज—लय आर कथ्य दुनूमे हिनक भास्वर भविष्यक संकेत दैत अछि।

—सोमदेव

मैथिलीक सुकंठ, सुशब्द, स्वानुभूत आ शाक्त कविक नाम थिक—बाबा बैद्यनाथ। गीते जकाँ गजल सेहो हिनक विलक्षणताक प्रतिनिधित्व करैत अछि आ तकर प्रमाण थिक टटका गजल-संग्रह—'पहरा इमानपर'। समसामयिक यथार्थ तथा वातावरणिक मूल्य-संकटकेँ साहसिक अभिव्यक्ति देबाक हेतु कवि धन्यवादक पात्र थिकाह।

कविताक नामपर छन्द-सामर्थ्यविहीन अराजकताक विरुद्ध बाबा बैद्यनाथक ई संग्रह ढाल बनत, से विश्वास कयल जयबाक चाही।

—मार्कण्डेय प्रवासी

......मैथिलीमे गजलक भंडार सुन्न नहि अछि, तँ भरलो नहि अछि। ई संग्रह एहि भंडारमे वृद्धि करत। कवि बाबा बैद्यनाथ समकालीन समाजक अनेक भाव-दशा (मूड) केँ पकड़बामे सफल भेल छथि। विकासशीलता आ उपभोक्ता-संस्कृतिक प्रसारक कारणेँ मनुक्खक तुच्छतापर नीक व्यंग्य कतोक ठाम अछि। कवि आ कविताक समादर हो, से हमर कामना अछि।

—जीवकान्त

बाबा बैद्यनाथ गत कतेको वर्षसँ विभिन्न मंचक श्रोताकेँ अपन गजलक माधुर्य आ कंठक तरलतासँ तऽर करैत आबि रहल छथि। 'पहरा इमानपर' संग्रहमे सभ वर्गक पाठक, श्रोता आ गबैयाकेँ अपन रूचिक गजल भेटतनि। किन्तु जखन ओ लिखैत छथि—"भरि पेट अन्न हमरा हेतै नसीब कहिया। बितलै उमेर हमरो डोकाक झोरपर"—तँ अनायासहि वर्तमान परिवेश बाजि उठैछ।

—रमानन्द झा 'रमण'

बाबा वैद्यनाथक बहुतो मैथिली गजल पढ़बा-सुनबाक अवसर हमरा भेटल अछि। कविताक एहि आयातित रूप (फॉर्म) कें ई अपन भाषा-संस्कार-कौशलसँ अत्यन्त मौलिक बना देने छथि। गजलक यैह मौलिकता हमरा अत्यन्त आकर्षित करैत रहल। तें हम हिनक लेखनीक प्रशंसक रहलहुँ अछि। हिनक पहिल मैथिली गजल-संग्रह 'पहरा इमानपर'क लोकप्रियताक हम कामना करैत छी—

– छत्रानन्दा सिंह झा

बाबा वैद्यनाथ सरिपहुँ 'बाबा' छथि। साहित्यिक अभिरुचिसँ ओत-प्रोत। बड़ सिनेही लोक। हमरा कहैत छथि किछु लिखू। मुदा ई ततेक लगीच छथि जे हिनका बारेमे लिखब किछु पार नहि लगैए। ई हमर अपन छथि, हम हिनकर छियनि। गजल कदाचित हमहूँ लिखि लैत करैत छी; आ तें क्यो जँ एहि दिस अबैत छथि तँ प्रसन्नता होइए। तथापि हम हिनका विषयमे किछु लिखऽमे संकोचक अनुभव करैत छी।

—विभूति आनन्द

एक

एकबेर फेरू नजरि शरण हम आयल छी
सौंसे संसारसँ हम सदति सतायल छी

सभ दिन मोह-निशामे हम सूतल रहलौं
व्यर्थ-जंजालमे हम जनम गमायल छी

सुखक संगी-सखा कियो ने संग देलक
टूटल पात जकाँ हम उड़िआयल छी

कामना-जालमे सभदिन उलझल रहलौं
पापक बोझसँ हम कतेक दबायल छी

कर जोड़ि विनती अछि आबो तँ माफ करू
दिअऽ आशीष अपन कथी ले' नुकायल छी



दू

झगड़ा कियै बझल छै गामक सिमानपर
पहरा कोना लगयबै लोकक इमानपर

द्वेषक छै आगि लेसल धू-धू जरैए बस्ती
नेता कोना हँसैए अप्पन गुमानपर

भूखल मरै छी निशिदिन मेहनति सदति करी
करजोक बोझ बड़का लादल-ए जानपर

नाङट उघार हम छी पहिरब पटोर कोना
संतोष कऽ रहल छी फाटल-पुरानपर

पंचमंजिला भवनमे जिनगी हुनक बितनि
बन्हक पड़ल छी हमसभ ककरो दलानपर

कटुता मेटा ज मोनक एक बनि ने रहबै
एकटा प्रश्न-चिह्न उठतैक गीता-कुरानपर

अपने भवन जरा कऽ सुख-चैन जे तकैए
अफसोच भऽ रहल अछि तेहन नादानपर

अगुआ बनल-ए भारत शान्ति हेतु सदिखन
सभ मन्त्र उड़ि रहल छैक अन्हड़-तूफानपर

ककरो कोना बुझयबै राकस जखन निमन्त्रित
गरदनि सभक छै लटकल धरगर कृपाणपर



तीन

समाजक रूप जँ झलकय तखन साकार अछि कविता
कतहु शृंगार अछि कविता कतहु अंगार अछि कविता

जखन अन्याय केर बलपर करय क्यो देशपर शासन
तखन जनता-जनार्दन लए बनै ललकार अछि कविता

धरापर चतुर्दिक पापक जखन साम्राज्य पसरै छै
तखन ई राम आ कृष्णक कोनो अवतार अछि कविता

जखन दैहिक धरातलपर करय क्यो प्रेम ककरोसँ
तखन ई मिलन अवसर लए मधुर-उपहार अछि कविता

जखन क्यो ज्ञान-गंगामे लगाबय प्रेमसँ डुबकी
तखन संजीवनी सन ई सरस रसधार अछि कविता

लगय रुचिगर ई तखने टा जखन हो पेटमे दाना
जतय अछि भूखकेर ज्वाला ततय बेकार अछि कविता

समर्पण-भाव संग "बाबा" पहिर कऽ प्रेम केर चश्मा
जतय देखू ओतय सभठाँ सगर संसार अछि कविता



चारि

ककरा कहबै आ के करतै एतऽ भरोसक बात
निसाँखोर लग भऽ ने सकैए कखनो होशक बात

छै आलोचक सभ अनकर आ अपने मन सभ श्रेष्ठ
गुणकेर चर्चा काटय दौड़य करैए दोषक बात

छोट-पैघ सभ पकठायल छै क्यो ने एहिठाँ छोट
वृद्ध-कागसँ करू बन्धु नहि अपने पोसक बात

देस-विदेसक राजनीतिमे सभ पारंगत लोक
बता सकत नहि पुछिकऽ देखू टोल-पड़ोसक बात

कार्यालय लेल गुरुमन्त्र ई सीखि लिअऽ तँ मौज
बस चमचाकेँ खुश राखू आ बिसरू बाँसक बात

सभ दिन सँ जे सहैत रहल छै शोषण, अत्याचार
ठंढा शोणित छै नहि सुनतै ककरो जोशक बात

भेटि गेल छै सभकेँ "बाबा" कुम्भकरण केर नीन्द
जागि रहल अछि नवतुरिया सभ ई संतोषक बात



पाँच

तकलापर मोसकिलसँ भेटत एहि जगमे इन्सान
हम ककरापर विश्वास करू आ के अप्पन के आन

एखन समाजमे मात्र रुपैया मातु-पिता, भगवान
स्वार्थ-सिद्धिमे विघ्न पड़ल आ दुश्मन भेल संतान

पहिल भेँटमे जे क्यो लागय शिष्ट, सुशील, दयालु
मुदा बादमे भेद खुलय तँओ कातिल, बैमान

अपन स्वार्थ लए जे क्यो बाजय मिसरी घोरल बोल
काज ससरिते ओ तखने सँ छोड़य व्यंग्यक बाण

मुँहमे राम बगलमे छूरी के साधू के चोर
जँ चपेटमे पड़ि गेलहुँ तँ आफतमे पुनि जान

अछि अश्लील मनोरंजनमे रत निशिदिन सभ लोक
जँ मंगल हित काज करू क्यो होयत बड़ व्यवधान

देखि प्रपंच जगतकेर बंधु आतुर भऽ गेल मोन
समय काटि रहला अछि "बाबा" भऽ कऽ अन्तर्ध्यान



छओ

बन्धुवर कोन बाट दुनियाँ जा रहल छै
सत्य कानय, झूठ कीर्त्तन गा रहल छै

चारू दिस अपकर्मकेर साम्राज्य छै
जे करैछ सत्कर्म सभ दुःख पा रहल छै

जे खटैत अछि से मरैछ भूखल एतऽ
पाखंडी आ दुष्ट बैसल खा रहल छै

जे बहुत धर्मी कहय से सभ चोर छै
जे करय षड़यन्त्र सभसँ छा रहल छै

जे खुनौलक ओतेक पोखरि आ इनार
से पियासल रातिदिन मुँह बा रहल छै

थिकै ई प्रगति चारि दिनकेर बाढ़िसन
फेर "बाबा" मास गर्मीक आ रहल छै



सात

मोल राखय तखन जिनगी बनय क्यो त्यागी जखन
राति तखने सरस होयत रातिमे जागी जखन

प्रेम निःस्वार्थे टिकै छै बात एकदम सत्य ई
क्यो मित्रतासँ दूर तखने मित्रसँ मांगी जखन

खाधिमे खसबय कुसंगति नित्य जँ सम्पर्क हो
धर्म बाँचत मित्र तहिखन पापसँ भागी जखन

छै विचारेकेर महत्ता पूज्य नहि कहियो धनिक
बनब अह प्रियपात्र सभकेर सरलतम लागी जखन

लाख भटकू एम्हर-ओम्हर स्वर्ग छै घरमे सदति
अछि निरर्थक खुशी सभटा खुश ने वामांगी जखन

कलपि रहलै मातृभाषा नोर नहि सूखय एकर
जागृति तखने एतै, सभ बनब सहभागी जखन



आठ

कोन एहन हम काज करू जे लागय कोनो पाप नहि
भूखक आगिसँ बेसी भैया अछि कोनो संताप नहि

रक्तबीज सन बढ़ल जाइ छै आइ मनुज संतान कोना
जे खाली जनमेटा दै छै ओ पापी अछि बाप नहि

जे अपने टा स्वार्थ बुझै छै व्यर्थ ओतए उपदेश कोनो
कारी कम्मलपर पड़तै पुनि आन रंगकेर छाप नहि

ककरो रोटीपर आफत छै कतहु सड़ैए दूध-मलाइ
ई अपनहि कर्मकेर फल थिक पूर्वजन्मकेर श्राप नहि

कर्महीन बनैछ ओ प्राणी जे दोसरपर दोष मढ़य
कार्यसिद्ध होइछ मेहनतिसँ बैसल कयने जाप नहि



नओ

हमसभ विराजित छी जतऽ एहि जगहकेर बड़ नाम छै
एतऽ काव्य-गंगा बहैत छै सभ तीर्थ तेँ एहि ठाम छै

प्रेम-आराधक एतऽ सभ ज्ञानकेर सभ पारखी
एहिठाँ रहैछ लक्ष्मी सदा आ सरस्वतीकेर धाम छै

ई भीड़ जे उमड़ल एतऽ—जन-जागृतिक संकेत थिक
माँ-मैथिलीक सौभाग्य जे विधि भेल दहिन, ने बाम छै

मोनमे दबल जे बात हो सभ मिलि एतऽ बाहर करू
दिल खोलि गप्प कऽ ली एतऽ ई सरस लोकक गाम छै

होयत हमर सौभाग्य जँ तँ भेँट पुनि होयबे करत
नहि तँ बुझू जे आखिरी सभकेँ ई हमर प्रणाम छै



दस

क्यो एकरा दियौक नहि टोक
ई अछि बहिरा ओ अछि बौक
ई नाचै अछि अपने तालेँ
चढ़लापर कखनो कऽ झोंक
अपनहि टा हित ई बूझै अछि
अपनहि दुनियाँ अपनहि लोक
बेचि रहल ईमान-धरम ई
कखनो खुदरा कखनो थोक
चूसय ई भारतमाता केँ
ज्यों शोणितकेँ चूसय जोंक
सत्य-अहिंसा केर प्रेमीकेँ
देखा रहल बन्दूकक नोक
देश रहय अथवा ई डूबय
एकरा हर्ष ने आ किछु शोक
भऽ निराश ताकै छथि "बाबा"
भेटय नहि किन्नहु आलोक



एगारह

अस्तित्व बेचिकऽ अपन सभ घर सजा लियऽ
टी० वी० आ फ्रीज कीनि रेडियो बजा लियऽ

कहुना हो हँसोथू दुहु हाथसँ रुपैया
सभकिछु बिसरि विलासी-जिनगीक मजा लियऽ

खान्दानकेर प्रतिष्ठा अक्षुण्ण जे बचल छल
किछु स्वार्थकेर खातिर तकरा भजा लियऽ

अपन संस्कृतिकेँ अहाँ छोड़ू आ लात मारू
पाश्चात्य-सभ्यतामे डिस्कोक मजा लियऽ

अपनेक स्वरूप असली क्यो जानि ने सकैए
बनि पूज्य एहि जगमे सभसँ पुजा लियऽ

कहियो जँ मोन पड़य अप्पन अतीत जीवन
बस आँखि मूनि दूनू कनिञो लजा लियऽ



बारह

पति परायणा महादेवि ! ये कानब कियै ने बन्न करै छी
अहींक मारल देखू निशिदिन हमहुँ कोना हकन्न करै छी

कृपा-दृष्टि एतेक अहाँकेर रोज महाभारत होइते अछि
तइयो बिसरि प्रतिष्ठाकेँ अप्पन उनटे हमहि प्रसन्न करै छी

अहींक मोह-पाशमे कामिनी ! मित्र-कुटुम्ब, गाम-घर छूटल
आवाहन कऽ रोजे जतनसँ नव-नव दुःख आसन्न करै छी

माथ चटा ऑफिससँ जखने थाकल-मारल घर अबै छी
सिंहिनी जकाँ निज गर्जनसँ कोंढ़-करेजकेँ सन्न करै छी

अहाँक मुँहसँ आन ककरो नइहर छोड़ि बड़ाइ ने सुनलहुँ
लऽ शिकाइत सभकेर मच्छड़सन कान लग भन्न-भन्न करै छी

कते आस लगा कऽ "बाबा" हाथ अहाँक दरमाहा दै छी
फैशनक सामान मँगाकऽ राशन लेल बिपन्न करै छी



तेरह

हे यौ प्रियतम ! बाजू कने कियै रूसल छी
किछु अहाँ बाजू एना कियै चुप्पे बैसल छी

मोनक गप्प अहाँ ने कहलौं कोना बूझब हम
एहि फिकिरमे हम तँ देखू दिन भरि भूखल छी

भोर बजेलौं घरमे अहाँ कोना अबितौं यौ
बड़का कक्का बैसल छलाह तेँ ने हूसल छी

मोन चोरौलक आन कियो सेहो बाजू यौ
चैन गमयलहुँ निन्न भगयलहुँ कत्तए रीझल छी

जिनगी अपन एक - दोसर बिन कोना चलतै यौ
अहींक खुशीमे बूझू जे हमहुँ कुशल छी



चौदह

आयल बसन्त ने आयल कन्त भरल जुआनी गलल जा रहल छै
कंचन सन, ई कोमल बदन विरह-अगिनसँ जरल जा रहल छै

नित्य जपै छी नटवरनागर अहाँ जे बनल छी तइयो पाथर
काम-वाणसँ बेधल तन-मन मोनक उमंग मरल जा रहल छै

दर्द हमर तँ कियो ने बूझैए—'कहू हाल की अछि ?' सभ पूछैए
कोना बिताबी राति अन्हरिया ई एकदम ने सहल जा रहल छै

सखिसभ अछि पिया संग बिहँसै देखि-देखिकऽ मोन अछि तरसै
आसेँ काजर नैन लगायल डब-डब नोरेँ दहल जा रहल छै

आम्र-कुन्ज पर कोइली बाजय भ्रमरक गूँजसँ धीरज भागय
किए ने अबै छी यौ निर्मोही दु:खसँ छाती फटल जा रहल छै

मुँह अहँक हम देख ने सकबै कहल-सुनलकेँ माफ अहाँ करबै
आब ने बचब, प्राण हमर तँ नोरक धारमे बहल जा रहल छै



पन्द्रह

जिनगी भरि हम कनैत रहलहुँ
जुल्म अहाँक सभ सहैत रहलहुँ
नारीक रूपमे जनम लेल तेँ
कठपुतरी बनि नचैत रहलहुँ

देखि हमर हालतिकेँ अपने
खुलि-खुलि खूब हँसैत रहलहुँ
त्याग, दयाकेर मूर्ति बनल हम
मोमबत्ती सन जरैत रहलहुँ

तामस नहि भड़कय अपने केर
एहि डरसँ हम डरैत रहलहुँ
आश्वासनकेर बोल जहर सन
अहाँ कहैत हम सुनैत रहलहुँ

केहनो योग्य बनी तइयो हम
तिलक वेदी पर चढ़ैत रहलहुँ
ककरा लग दु:ख प्रगट करू हम
तिल-तिल कऽ तेँ गलैत रहलहुँ

लऽ कोदारि अपनहि हाथेँ हम
कब्र अपन कियै खुनैत रहलहुँ
भऽ निराश हम एहि जिनगीसँ
मौतक दिन नित गनैत रहलहुँ



सोलह

सपनामे अपन जीवन हम राति सजाबै छी
फेर देखि सत्यताकें हम भोरे लजाबै छी

जे गाछ मनोरथकेर बड़ प्रेमसँ रोपल छल
आब हाथमे आड़ी लऽ हम काटि खसाबै छी

एक स्वप्न-महल ओ अपन दुनियाँसँ जे सुन्नर छल
के हतभाग्य हमर सनक भऽ ठाढ़ जराबै छी

खान्दानकेर जे इज्जति बड़ कष्टसँ बाँचल छल
ओ नाचैए महफिलमे हम बीन बजाबै छी

बिनु मान - प्रतिष्ठाकेर बाजू ओ मानव की ?
ने चाही एहन जीवन तें मौत मनाबै छी



सत्रह

देखि रहल अछि सभ कियो हमरा खेल एहन सरेआम भऽ गेलौं
काज एहन कोन केलियै हम जे दुनियाँमे बदनाम भऽ गेलौं

निम्नेने होइए कखनो हमरा दुःख-तकलीफ ककरासँ कहबै
पड़ल रहैत छी निशिदिन घरमे हम एकदम नाकाम भऽ गेलौं

किछु दिन पहिने एहि समाजमे हमर प्रतिष्ठाक धाक जमल छल
एहन बसात कोना कऽ बहलै जकरासँ बेदाम भऽ गेलौं

अविचलित सभ दुःखमे हम रहबैक जँ सान्निध्य अहाँकेर भेटत
प्रेम-पथिक छी तें एहि नीरस दुनियाँसँ गुमनाम भऽ गेलौं

अछि अकाट्य बात ई "बाबा" प्रेम बिना संसार व्यर्थ अछि
किछु बूझय हमरा ई लोकसभ हम तँ बाबा-धाम भऽ गेलौं



अठारह

जे देवता सभक छल ओ चोर भऽ गेलै
ओ ज्ञान-पूँज रहितो लतखोर भऽ गेलै

सभ दिन ओ ठकि रहल छल मीत बनि कोनाकऽ
परदा जखन हटल छै तँ शोर भऽ गेलै

उनटा बसात बहलै उन्मत्त भऽ कोम्हर सँ
सभ दिनसँ चुप्प छल जे मुँहजोर भऽ गेलै

मन्दिर जखनसँ बनलै अपकर्मकेर अड्डा
आतंक, डर आ चिन्ता घनघोर भऽ गेलै

एक बाढ़ि तेहन अयलै छद्म-वंचनाकेर
विश्वास दहि गेलै सभ हिलकोर भऽ गेलै

ककरो ने आब कहबै दुःख-वेदना अपन हम
संगी हमर तँ एसकर बस नोर भऽ गेलै



उनैस

आकासे अछि फाटल साटल ने जा सकैए
जे भाग्यमे लिखल छै बाँटल ने जा सकैए

ग्रह-पिंडसन घेरायल हम छी असंख्य जनसँ
के चोर आ के साधु छाँटल ने जा सकैए

संबंध महज स्वार्थक सन्तान होअए कि पत्नी
गलती कोनो करय ओ डाँटल ने जा सकैए

देहक ने मोह हमरा काटब अहाँ तँ काटू
विश्वास मुदा मनकेर काटल ने जा सकैए

परित्याग कऽ देने छी संसर्ग ओ बेबस भऽ
जे थूक फेकि देलियै चाटल ने जा सकैए



बीस

मुस्की ने आबि सकतै कहियो ई ठोरपर
जिनगी कोना बितयबै आँखिकेर नोरपर

कनिञ्चो दया तँ करियौ जिनगी कठोरपर
कहियो ने लोभ हमरा अनकर करोड़पर

भरि पेट अन्न हमरा हेतै नसीब कहिया
बितलै उमेर हमरो डोकाक झोरपर

पैसाक युग आयल गुणक ने मोल होइछ
दुनियाँ तँ मरि रहल अछि कारी आ गोरपर

चेफरी पहिरि रहबै इज्जति ने हम गमयबै
नीयत ने हम डिगयबै ककरो पटोरपर

जनमे हमर भेलैए आफत जुलुम सहऽ लए
आङुर ने उठतै ककरो जुल्मी आ चोरपर



एकैस

छोड़ू अपन कपटकेँ आ उदार बनू भैया
गाँधी, सुभाष, नेहरूक अवतार बनू भैया

कपटी-छली एम्हर फेर गरदनि उठा रहल अछि
आबो नयन तँ फोलू ललकार बनू भैया

घीँचैछ बोच बनिकऽ भारतकेँ ओ भँवरमे
डूबैत अपन देसक पतवार बनू भैया

कर्मठ बनल रहब जँ काजक ने फेर कमी छै
मेहनति करू आ खुदसँ रोजगार बनू भैया

अपटा स्वार्थमे सभ निसभेर भऽ सुतल छी
अप्पन बनाकऽ सभकेर गरहार बनू भैया

पशुवत् ओकर छै जिनगी अपना लए जे जिबैए
जनहित करू आ देसक शृंगार बनू भैया



बाइस

निर्दोष, निरीह लोकक कियै जान जा रहल छै
देखू तँ अपन देशक सम्मान जा रहल छै

बढ़लै-ए अनय फेरसँ--रावण आ कुम्भकर्णक
निष्फल ओ वीर रामक सभ वाण जा रहल छै

अपनेमे सभ कटैए अपना लए सभ मरैए
बाजू कतऽ मनुजकेर संतान जा रहल छै

मायक शरीरकेँ ओ खंड-खंड काटि रहलै
सभ व्यर्थ महापुरुषक बलिदान जा रहल छै

तेहन बसात बहलै किछु स्वार्थकेर खातिर
मजहब आ जाति-इज्जति ईमान जा रहल छै

कन्याक वयस पनरह बरक उमेर पचपन
गौना कराक' बुढ़बा शमशान जा रहल छै

जहियासँ आबि गेलैए मुक्त छन्द, नव कविता
तहिएसँ मंचपरसँ मृदु-गान जा रहल छै



तेइस

कोना फहरैए आँचरक छोर सजनी
देखि मोनमे उठैछ हिलकोर सजनी

कियैक बनलहुँ-ए एहन कठोर सजनी
देखू टहकै-ए अंग पोर-पोर सजनी

राति पूनमकेर हो वा अमावसकेर
अहीँ आबी तँ होइछ इजोर सजनी

आब अपनहुँ तँ मोनकेर गप्प कहू
कियै लाजेँ कँपैत अछि ठोर सजनी

हम जे रहलहुँ एतेक दिन साधू बनल
आब बनबै अहाँ लए हम चोर सजनी

अहाँ महफिल जमाब'मे जँ संग दी
फेर होमऽ ने देबैक भोर सजनी



चौबीस

सरस बसन्त रिझाबऽ लगलै
कोकिल गीत सुनाबऽ लगलै

दूर बसै छल जे परदेसी
मस्त बनल घर आबऽ लगलै

बचलि कोना ओ करैत प्रतीक्षा
प्रियतमकेँ समझाबऽ लगलै

कते विरहिणी आतुर भऽ कऽ
दिनकेँ राति बनाबऽ लगलै

रस-परागसँ भरल फूल सभ
भ्रमरक मन ललचाबऽ लगलै

प्रीति पाबि अपनेकेर "बाबा"
गीत उमंगक गाबऽ लगलै



पचीस

सजि-धजिकऽ बाहर ने निकलू कऽ सोलहो शृंगार
मोन हमर डगमग भऽ जाइए बदलैए व्यवहार

सम्हरि-सम्हरिकऽ डेग बढ़ाबू ताकि रहल सभ लोक
सात सुरक सरगम सुनबै अछि पायलकेर झंकार

सौन्दर्यक सुरभित सरिता लेल सदति शरीर समर्पित
अहिँकेँ पाबि हमर जिनगी ई भऽ सकतै साकार

जेँ संकेत अहाँसँ भेटय तँ ई सरिपहुँ जानू
संग पड़ायब हम एखने प्रिय छोड़ि अपन घर-द्वार

आकर्षणकेर मंत्र अहाँ प्रिय समटि लिअऽ चुपचाप
अहीँक पाछू सभ दौड़ै अछि बिसरि सगर संसार



छब्बीस

जँ कोनो दुःख मोनमे हो तँ दिल खोलि हमरा सदति बताबी
प्रिय छी अभागल हम जनमेसँ व्यर्थे हमरा एना ने सताबी

करैछ निरन्तर जे युद्ध भयंकर मोनमे दाबल कतेक समस्या
प्रगट होअय तँ हम सभ विधिसँ करब निदान तेँ शीघ्र बताबी

अहाँ बिनु हमरा तँ व्यर्थ लगैए एहि दुनियाँकेर सभ सुख-सुविधा
संगे जियब आ संग मरब हम जँ मोन हो कखनो अजमाबी

कतेको कष्ट हम देल अहाँकेँ एकटा कष्ट आरो हम चाही
मधुर-स हँसँ जँ हँसि-हँसिकऽ दूधक संगमे जहर पियाबी

क्षणमे जिनगी क्षणमे मरनी "बाबा" एहने तँ सृष्टि चलैए
मृत्यु भेटय एहने जँ हमरा जनम-जनम लेल यैह मनाबी



सताइस

नहि हम घरमे छी आ ने हम भागल छी
कतहु ने चैन भेटय केहन अभागल छी

कहू कोन गलतीपर अहाँ तमसायल छी
किछु नहि कयलहुँ हम आ ने किछु बाजल छी

बीतल बात कोनाकऽ सभटा बिसरब हम
ने तँ हम जोगिये छी नहियेँ पागल छी

सभ अंग काटि कऽ अपन कृतमुख बनि रहलौं
कथीपर मातल छी आकि भकुआयल छी

आँखिक आगूमे देसकेँ ओ लूटि रहल
कहू हम सूतल छी आकि हम जागल छी



अठाइस

ओ बादल खाली गरजै छै—तेँ पूरत जलकेर आस कोना
जे फूल बनल अछि कागतकेर तहँ भेटत कहू सुवास कोना

जकरा ने हृदय छै अन्तरमे अछि व्यर्थ ओतए करुणा, विनती
कियो बाजू तँ तरहत्थीपर उगि सकतै हरियर घास कोना

जे अपनहि स्वार्थमे डूबल छै ओ नीतिक गप्प कोना सुनत
इजोत ओ रातुक उल्लूकेँ भऽ सकतै कहियो रास कोना

सभठाम छै पसरल धोखा आ शोषण, हत्या, ईर्ष्या आ घृणा
फाटल कपड़ा दरजी सीतै मुदा सीतै ओ आकाश कोना

संघर्षक नाम तँ जीवन थिक अपनहिसँ तेँ संघर्ष करो
जकरा ने भरोसा अपनापर ओ सुनतै ने उपहास कोना



उनतीस

भोर भागल जेना दूपहर देखि कऽ
गाम-गामो ने रहलै शहर देखि कऽ

आयत गरमी जखन नहि पानियेँ पड़त
हेतै खेती ने छुच्छे नहर देखि कऽ

बाढ़ि मिथिलाकेँ दै छै समुद्रे बना
क्यो ने रहते एना गाम-घर देखिकऽ

नोर भूकम्पकेर पोछतै के ककर
गाम मरघट आ घर खंडहर देखिकऽ

कोना कानैए बस्ती मसोमात सन
रोजे शोणित आ हत्या कहर देखिकऽ

के कहतै जे मन्दिरमे भगवान छै
स्वर्णमंदिर आ अमृतसर देखिकऽ

जकर मिटलै सिनुर ओहि पंजाबमे
कोना जीतै सासुर-नइहर देखिकऽ

राति-दिन बउआ खाली कमेंट्री सुनए
कियैक पढ़तै क्रिकेटक लहर देखिकऽ

बाप जोगय घर माय जाइ छं बजार
बेटी माइयोसँ छै फरहर देखिकऽ

बाट ताकने छी सभदिन सुधापान केर
आब जीबै कोना हम जहर देखिकऽ



तीस

शकुनिकेर पासापर हारल अछि मान हमर
शूलीपर यीशू जकाँ टांगल अछि प्राण हमर

जिनगीक समस्याकेर हेतैक निदान कोना
चक्रव्यूहक भेदनमे घायल अछि जान हमर

एक भेलै, दू भेलै, तीन, चारि, पाँच भेल
काँकोड़-बियान जकाँ जनमल संतान हमर

सभदिन इजोतटामे हुनकर छल संग बनल
जिनगीक अन्हरियामे गायब अछि चान हमर

मित्र सभक भीड़ छलै —हरदम कचहरी जकाँ
जीवन रहै स्वर्ग, मुदा बनलै सुनसान हमर

"बाबा" बिहाड़ि कतेक हमरा हिला ने सकल
सुतलोमे हरदम छल जागल ईमान हमर





नाम—बाबा वैद्यनाथ

पिताक नाम—स्व० सूर्यमणि झा

माताक नाम—स्व० गोरी देवी

जन्म तिथि—३ अगस्त, १९५५ इ०, (श्रावण धवल त्रयोद ,

शिक्षा—बी० ए० (हिन्दी प्रतिष्ठा)
एम० ए० द्वय (हिन्दी, दर्शनशास्त्र)

पता—कचहरी बलुआ, भाया-बनैली, जिला-पूर्णियाँ

वृत्ति—यूको बैंकमे अधिकारी

मैथिली आ हिन्दी-साहित्यक विभिन्न बिधामे समान रूपे लेखन—अखिल भारतीय त्रिभाषा (हिन्दी, मैथिली, उर्दू) साहित्य एवं कला परिषद्क संस्थापक आ महासचिव—"मिथिला सौरभ" (मैथिली/त्रैमासिकी) आ "त्रिवेणी" (हिन्दी, मैथिली आ उर्दूक काव्य-संकलन)क सम्पादन—हिन्दी आ मैथिलीमे लिखल कैकटा नाटक, उपन्यास, कथा-संग्रह, कविता-संग्रह अप्रकाशित ।